साद की तलाश में अंधेरे में हाथ-पैर मार रही है पुलिस

प्रयास जारी ▶ फिर निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज पहुंची क्राइम ब्रांच

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमण को लेकर देश को मुसीबत में डालने वाले तब्लीगी जमात के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद व प्रबंधन से जुड़े छह अन्य सहयोगियों को पकड़ना क्राइम ब्रांच के लिए मुसीबत साबित हो गया है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश व हरियाणा में सातों के ठिकानें पर छापेमारी की जा रही है, लेकिन किसी का कोई अता-पता नहीं है। ऐसे में फिलहाल क्राइम ब्रांच अंधेरे में ही हाथ-पैर मार रही है।

मामले की जांच कर रही क्राइम ब्रांच बुधवार को तीसरी बार मरकज पहुंची और वहां जांच की। पुलिस की जांच से पता चला है कि मरकज में सालभर देश-विदेश से लोग आते रहते थे। हर माह करोड़ों रुपये चंदा इकट्ठा किया जाता था। चंदे की पर्चियां कटती थीं। उसके बाद मौलाना साद जमातियों को इस्लाम की शिक्षा देने के लिए अलग-अलग राज्यों में भेज देता था। 15 दिन अथवा 30 दिन बाद वे लोग वापस लौटकर रिपार्ट देते थे।

निजामुद्दीन में वेरिफिकेशन अभियान : दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में कोरोना वायरस संक्रमण को लेकर वेरिफिकेशन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान लोगों से कोरोना संक्रमण के लक्षणों को लेकर पूछताछ की जा रही है ताकि किसी भी संदिग्ध को क्वारंटाइन किया जा सके। तस्वीर में स्वास्थ्यकर्मी किसी घर की डोरबेल लकड़ी से दबा रही है। एएनआइ

मामला उजागर होने के बाद बीते 28 मार्च को मौलाना साद, मौलाना मुहम्मद अशरफ, मुफ्ती शहजाद, डॉ. जीशान, मुर्शलीन सैफी, मुहम्मद सलमान व युनूस से भागने में सफल हो गया था। तब से इन सातों का कोई अता पता नहीं है।

मोबाइल साथ नहीं रखता साद : मौलाना साद की लोकेशन के बारे में क्राइम ब्रांच को इसलिए जानकारी नहीं मिल पा रही है कि वह मोबाइल फोन नहीं रखता है। लेकिन प्रबंधन से जुड़े उसके छह मौलाना तो मोबाइल रखते हैं। इनके फोन 28 मार्च से ही बंद है। क्राइम ब्रांच इन लोगों को भी ढूंढने में नाकाम साबित हो रही है। हालांकि क्राइम ब्रांच मौलाना साद के चचेरे भाई जुबेर के जरिये उस तक पहुंचने में लगी हुई है।

आठ दिनों तक खुफिया रिपोर्ट दबाए रहे अधिकारी

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

- स्पेशल ब्रांच ने 15 मार्च को ही कर दिया था आगाह
- 23 मार्च से पुलिस और प्रशासन ने शुरू किया सख्ती दिखाना

देश में कोरोना का बड़ा संकट खड़ा करने वाले तब्लीगी जमात की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, मौलाना मुहम्मद साद की मनमानी के साथ पुलिस और प्रशासन की नाकामी की भी पोल खुलने लगी है। पता चला है कि पुख्ता खुफिया रिपोर्ट को जिम्मेदार अधिकारियों ने आठ दिनों तक दबाए रखा, जिसकी वजह से इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ रहा है।

सूत्रों के अनुसार दिल्ली पुलिस के स्पेशल ब्रांच ने 15 मार्च को ही दक्षिण-पूर्वी जिला पुलिस के अलावा, स्वास्थ्य विभाग, जिलाधिकारी, एसडीएम डिफेंस कॉलोनी और अन्य संबंधित विभागों को आगाह कर दिया था कि तब्लीगी मरकज में बड़ी संख्या में देश-विदेश से आए लोग ठहरे हुए हैं। ये लोग कोरोना को लेकर संकट पैदा कर सकते हैं, लेकिन आठ दिनों तक अधिकारियों ने इस इनपुट को दबाए रखा और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। पुलिस ने 23 मार्च से सख्ती दिखानी शुरू की, लेकिन इसमें आठ दिनों का वक्त लग गया। इतना समय कोरोना को फैलाने के लिए पर्याप्त था। अगर 15 मार्च को ही मरकज खाली करा दिया गया होता तो शायद इतने बड़े स्तर पर कोरोना संक्रमण को फैलने से रोका जा सकता था।

सूत्रों के मुताबिक इस अत्यंत गोपनीय रिपोर्ट में उक्त लापरवाही का जिक्र किया गया है। मरकज में इकट्ठा हुए जमातियों के बारे में 14 मार्च को स्पेशल ब्रांच को पता चला। 15 मार्च को उसने यह सूचना वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को दी।

बताया जाता है कि प्रशासन ने मरकज के मौलाना साद व प्रबंधन से जुड़े छह मौलानाओं से संपर्क कर उन्हें खाली करने को कहा, लेकिन उन्होंने अनसुना कर दिया। 23 मार्च को स्पेशल ब्रांच ने डीसीपी दक्षिण-पूर्वी जिला आरपी मीणा और निजामुद्दीन थाना पुलिस को इस संबंध में सूचित कर सख्त कार्रवाई करने को कहा। तब पुलिस अधिकारियों ने मौलाना साद व प्रबंधन से जुड़े छह मौलानाओं को थाने बुलाकर सख्त चेतावनी दी और तुरंत खाली करने के निर्देश दिए। फिर भी मरकज खाली नहीं किया गया। इसके बाद पुलिस और प्रशासन के लोग मंत्रणा करते रहे। आखिर स्वास्थ्य विभाग ने 25 मार्च को मरकज पहुंच कर वहां ठहरे लोगों की स्वास्थ्य जांच शुरू की। इनमें छह बीमार मिले। 27 मार्च को पुलिस व प्रशासन को सूचना मिली कि मरकज से तेलंगाना गए छह लोगों व जम्मू गए एक शख्स की कोरोना से मौत हो गई है। इसके बाद पुलिस हरकत में आई और 28 मार्च को दिन भर मौलाना साद पर मरकज खाली कराने का दबाव बनाया गया। रात को जब वह खाली करने की बात मान गया तब 29 मार्च से पुलिस व प्रशासन से खाली कराना शुरू किया गया और एक अप्रैल के तड़के तक पूरा खाली कराया गया।

साद देता रहा पुलिस को झूठी जानकारी

मरकज खाली कराने से पहले पुलिस जब भी साद से वहां ठहरे लोगों की संख्या के बारे में पूछती, तो वह बार-बार 1,000 लोगों के होने की गलत जानकारी देता रहा। बाद में वहां से 2,300 लोग निकले।

द्विभाषिये लेकर चलते हैं विदेशी और दूसरे राज्यों के जमाती

मनोज मिश्रा, सहारनपुर

निजामुद्दीन मरकज से जमात के रूप में निकलने वाले गैर हिंदी द्विभाषी जमाती अपने साथ अनुवादक लेकर चलते हैं ताकि इस्लाम के प्रचार-प्रसार में भाषाई दिक्कत सामने न आए। उप्र के सहारनपुर आए 57 विदेशी व 105 दूसरे राज्यों के जमातियों के साथ भी अनुवादक हैं। अब यही द्विभाषी गैर हिंदी भाषी मरीजों व प्रशासन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं।

तब्लीगी मरकज के अमीर (प्रमुख) मौलाना साद जमातियों को धर्म के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के लिए कहते हैं। जमात गांवों में भी जाती है। इस दौरान भाषा को लेकर कोई दिक्कत न आए, इसलिए मरकज से ही द्विभाषी लेकर चलते हैं। सहारनपुर में क्वारंटाइन किए गए विदेशी जमातियों और गैर राज्यों के जमातियों के साथ भी द्विभाषी हैं। किर्गिस्तान का 49 वर्षीय जमाती कोरोना संक्रमित है। मरकज से इसे मुंबई निवासी द्विभाषी जलालुद्दीन मिला है। इसे ही आंध्र प्रदेश के जमातियों की भी मदद करनी थी। जलालुद्दीन 25 भाषाएं जानता है। उसके साथ ही कुछ और भी द्विभाषी हैं जो क्वारंटाइन किए गए हैं।

एक फरवरी 2020 के बाद तब्लीगी जमात में शामिल होकर सहारनपुर मंडल में पहुंचने वाले विदेशी जमातियों की संख्या 90 है। इनमें 57 विदेशी जमाती मस्जिदों में मिले हैं। मुजफ्फरनगर में 12 और शामली में 21 विदेशी जमाती मिले हैं। पुलिस जांच में जो कुछ सामने आया है, उसके अनुसार मंडल में दूसरे राज्यों के 373 जमाती निकले। इनमें सर्वाधिक 170 मुजफ्फरनगर में मिले। सहारनपुर में 105 जमाती निकले। शामली में 98 जमाती मिले। डीएम अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि सहारनपुर में सभी विदेशी व अन्य जमातियों को चिह्नित किया गया है। भाषाई दिक्कत न हो, इसके लिए जमातियों को निजामुद्दीन मरकज से द्विभाषिये मिलते हैं। यहां भर्ती जमातियों से बात करने के लिए इन्हीं द्विभाषियों की मदद ली जा रही है।

ऐसे बनता है द्विभाषियों और बहुभाषियों का पूल : जानकारों के मुताबिक, तब्लीगी जमात की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया में एक यह भी है कि बहुभाषियों का बड़ा पूल भी बनाते जाया जाए। यह काम मुख्यतया तब्लीगी जमात के लंदन स्थित मरकज जो कि यूरोप का मुख्यालय है, में किया जाता है। वहां विभिन्न भाषाओं को जानने वाले युवा जमाती अलग-अलग मजलिसों में सालभर जुटते हैं। इन मजलिसों में मुख्य वक्ता कोई भारतीय जमाती ही होता है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के जमाती को भी तरजीह दी जाती है। मुख्य वक्ता उर्दू में अपनी बात (बयान) कहता है। जबकि दुनियाभर के अलग-अलग जानकार जो उर्दू भी जानते हैं, अलग-अलग देशों से जुटे जमातियों के लिए तुरंत अनुवाद करते चलते हैं। इसके लिए लंदन स्थित मरकज में अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। मजलिस में शामिल हर जमाती माइक्रो फोन लगाए होता है। उधर, अलग केबिन में बैठे अलग-अलग भाषाओं के द्विभाषिये उसी समय वाक्य दर वाक्य मुख्य वक्ता के बयान का अनुवाद करते चलते हैं।

पाकिस्तान कनेक्शन

जानकारों की मानें तो इन समर्पित विदेशी जमातियों को भारत से पहले कुछ समय के लिए पाकिस्तान भेजा जाता है। जहां अपनी जिम्मेदारी को साबित करने के बाद ट्रेनिंग के अंतिम पड़ाव के रूप में भारत दौरे की राह बनती है।

तब्लीगी मरकज पर कब्जा जमा सकता है जमात-ए-शूरा

नेमिष हेमंत, नई दिल्ली

- साद के मरकज पर कब्जे के बाद बना ली थी अलग राह
- तुर्कमान गेट स्थित दरगाह फैज इलाही को ठिकाना बनाए है यह गुट

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज के अमीर (मुखिया) मौलाना मुहम्मद साद पर कस रहे पुलिस-प्रशासन के शिकंजे का फायदा उठाते हुए तुर्कमान गेट स्थित जमात-ए-शूरा मरकज पर कब्जा कर सकता है। हालांकि यह गुट पूरे प्रकरण पर चुप्पी साधे हुए है, लेकिन सूत्र बता रहे हैं कि अंदरखाने पूरी निगाह है और भविष्य की रणनीति पर विचार चल रहा है।

मालूम हो कि आपराधिक षड्यंत्र व महामारी अधिनियम सहित कई धाराओं में मुकदमा दर्ज होने के बाद मुहम्मद साद और उसके करीबी फिलहाल फरार हैं। इनके खिलाफ पुलिस ने लुकआउट सर्कुलर जारी किया है और धरपकड़ के लिए दिल्ली व उत्तर प्रदेश में दबिश दे रही है। जानकारों की मानें तो साद की गिरफ्तारी और सजा की स्थिति में जमात को चलाने के लिए नए अमीर का चयन करना पड़ेगा। ऐसे में जमात शूरा के नाम से तुर्कमान गेट के दरगाह फैज इलाही में मुख्यालय बनाए तब्लीगी का दूसरा गुट इसके लिए आगे आ सकता है। इस गुट के लोगों का मानना है कि अगर साद लोगों की सलाह और सरकार के दिशा-निर्देशों को मानकर मरकज का आयोजन स्थगित कर देता तो कोरोना को लेकर इतनी भयावह स्थिति नहीं होती। जमात के दामन पर यह दाग नहीं लगता। स्वयं इस गुट ने कोरोना मामले को देखते हुए अपने सारे आयोजन समय रहते स्थगित करते हुए लोगों को उनके-उनके घर भेज दिया था।

साद और जुहेरूल हसन के गुट में हुआ था खूनी संघर्ष : शूरा (निर्णायक मंडल) किसी संस्था की निर्णय लेने वाली बड़ी इकाई होती है, लेकिन मौलाना साद ने तब्लीगी जमात पर कब्जा करने के लिए तत्कालीन अमीर मौलाना जुबेर के वर्ष 2015 में निधन के बाद इसको भंग कर दिया था। बिना शूरा के निर्णय के ही साद ने मौलाना जुबेर की जनाजा नमाज भी पढ़ी थी। यह वही पढ़ सकता है, जो उस समय नायब होगा और अमीर बनेगा। इसे लेकर साद और जुबेर के पुत्र मौलाना जुहेरूल हसन के गुट में खूनी संघर्ष भी हुआ था। यह विवाद वर्ष 2018 में तब खत्म हुआ जब मौलाना जुहेरूल हसन व जमात शूरा के सदस्य मौलाना इब्राहिम व मौलाना अहमद लाठ समेत अन्य ने तुर्कमान गेट को नया ठिकाना बना लिया। यहां सारे निर्णय शूरा के माध्यम से ही लिए जाते हैं।

तब्लीगी जमातियों ने 'जोड़' में बांटी तकलीफ

बिजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

हरियाणा में तब्लीगी जमातियों ने अपने मजहबी कार्यक्रम 'जोड़' के जरिये ही जाने-अनजाने कोरोना वायरस की तकलीफ बांटी है। दिल्ली से सटे दक्षिण हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद औद्योगिक नगरों और इनसे सटे मेवात के नूंह व पलवल जिले में संक्रमित 105 मरीजों में 87 तब्लीगी अथवा इनके संपर्क में आए वे लोग हैं जिन्होंने 'जोड़' में हिस्सा लिया था।

क्या है जोड़ : मस्जिदों में रात को इशा की नमाज से सुबह फजर की नमाज पढ़ने तक के कार्यक्रम को जोड़ कहा जाता है। जमाती घर-घर जाकर लोगों को मस्जिद में होने वाली तकरीर के लिए आमंत्रित करते हैं। क्षेत्र के 10 से 30 प्रमुख लोग बुलाए जाते हैं और इन्हें करीब 10 घंटे के दौरान मजहबी घुट्टी पिलाई जाती है। जोड़ हॉल के अंदर होता है। व्यवस्था में जुटे लोगों को भी अंदर नहीं आने दिया जाता। जोड़ में हिस्सा ले रहे लोग सिर्फ पानी पी सकते हैं, बाकी भोजन या जलपान लेने की इजाजत हॉल में नहीं होती। जमाती लोगों के साथ भोजन भी करते हैं।

चार जिलों में सबसे ज्यादा केस : फरीदाबाद, गुरुग्राम सहित इनसे लगते मेवात क्षेत्र के नूंह और पलवल में अब तक 87 जमातियों और इनके संपर्क में आए लोगों के टेस्ट पॉजिटिव आए हैं। नूंह में सबसे ज्यादा 38 संक्रमित लोगों में 35 जमाती हैं। पलवल में 28 संक्रमित मरीजों में 27 जमाती या इनके संपर्क में आए लोग हैं। फरीदाबाद के कुल 28 में से 17 और गुरुग्राम के कुल 11 में से 8 जमाती हैं।

पुन्हाना में भी मरकज, नूंह को बनाया केंद्र : दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात का मुख्यालय (मरकज) है, लेकिन हरियाणा के पुन्हाना में उनका स्थानीय मुख्यालय (मरकज) है। जमातियों ने नूंह को अपनी गतिविधियों का केंद्र बनाया था। यहीं से जमाती विभिन्न गांवों व शहरों में जाते और लौटकर आते थे। हरियाणा सरकार ने नूंह और पलवल जिला के कोरोना संक्रमित जमातियों को इलाज के लिए भी नूंह जिला के नल्हड मेडिकल कॉलेज में रखा है।

हरियाणा में छिपे जमातियों पर अब हत्या के प्रयास के मुकदमे होंगे

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : निजामुद्दीन मरकज (मुख्यालय) से आकर हरियाणा में छिपे जमातियों के समर्पण करने का समय बुधवार शाम पांच बजे खत्म हो चुका है। राज्य के गृह मंत्री अनिल विज के मुताबिक इसके बाद पकड़े जाने वाले जमातियों के विरुद्ध हत्या के प्रयास (धारा 307) में मुकदमा दर्ज किया जाएगा। यदि टेस्ट पॉजिटिव रहा तो मुकदमा चलता रहेगा और रिपोर्ट नेगेटिव आने की स्थिति में धारा 307 हटा दी जाएगी। बुधवार शाम तक इस अवधि तक करीब दो सौ तब्लीगी जमाती प्रशासन के समक्ष पेश हुए। राज्य में तब्लीगी जमातियों की संख्या अब 1562 हो चुकी है। इनमें 82 तब्लीगी जमाती ऐसे हैं, जिन्हें कोरोना संक्रमित पाया गया है।

'कोरोना के लिए किसी समुदाय या क्षेत्र को जिम्मेदार न ठहराएं'

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोविड-19 से जुड़े सामाजिक तिरस्कार के मसले पर सरकार ने बुधवार को एक एडवाइजरी जारी कर लोगों से अनुरोध किया कि कोरोना वायरस के प्रसार के लिए किसी समुदाय या क्षेत्र को जिम्मेदार न ठहराएं। तब्लीगी जमात का प्रकरण सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर मुस्लिम समुदाय को वायरस के प्रसार के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने के मद्देनजर यह एडवाइजरी जारी की गई है।

स्वास्थ्य मंत्रालय की वेबसाइट पर पोस्ट की गई इस एडवाइजरी में कहा गया है कि ऐसा व्यवहार दुश्मनी, अराजकता और सामाजिक व्यवधान बढ़ा सकता है। सरकार ने एडवाइजरी में कोरोना वायरस प्रसार के मद्देनजर यह भी बताया है कि क्या करें और क्या न करें। एडवाइजरी में लोगों से अनुरोध किया गया है कि स्वास्थ्य कर्मियों, सफाई कर्मियों या पुलिस को निशाना न बनाएं क्योंकि ये आपकी मदद के लिए हैं। ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिसमें कोविड-19 से प्रभावित लोगों के साथ-साथ स्वास्थ्य कर्मियों, सफाई कर्मियों और पुलिस कर्मियों के साथ संक्रमण की आशंका से भेदभाव किया जा रहा है। यहां तक कि जो लोग कोविड-19 से ठीक हो चुके हैं, उनके साथ भी भेदभाव किया जा रहा है। ऐसे पूर्वाग्रहों का तत्काल निराकरण करने की जरूरत है।

उप्र में घर से निकलने पर अब मास्क पहनना जरूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : उत्तर प्रदेश में अब घर से बाहर निकलने पर मास्क लगाना अनिवार्य होगा। हर व्यक्ति ट्रिपल लेयर मास्क अनिवार्य रूप से लगाएगा। अगर मास्क नहीं है तो साफ कपड़े, रुमाल, गमछे या दुपट्टे को तीन परत में लपेटकर मास्क के रूप में मुंह पर बांधा जा सकता है। प्रमुख सचिव स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि अब यदि कोई व्यक्ति बिना मास्क के बाहर घूमता मिला तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यह आदेश एपिडेमिक एक्ट 1897 और उत्तर प्रदेश एपिडेमिक डिजीज कोविड-19 विनियमावली 2020 के तहत जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि किसी भी परिस्थिति में इस्तेमाल किए हुए मास्क या फेस कवर को बिना धोए दोबारा मुंह और नाक नहीं ढकना चाहिए। उन्होंने बताया कि एन-95 मास्क केवल चिकित्साकर्मियों को पहनने की संस्तुति की गई है।

मध्य प्रदेश में लगाया गया एस्मा

राज्य ब्यूरो, भोपाल : मध्य प्रदेश में कोरोना वायरस के फैलाव को देखते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने स्वास्थ्य सेवाओं को अत्यावश्यक सेवा घोषित कर दिया है। इसके तहत अब स्वास्थ्य से जुड़ी सेवाएं देने से कोई इन्कार नहीं कर सकेगा।

अब न तो स्वास्थ्य का अमला ड्यूटी पर आने से मना कर सकता है और न दवा दुकानदार दुकान खोलने या निर्माता दवा या उपकरण बनाने से इन्कार कर सकता है। यदि किसी ने ऐसा किया तो उसके खिलाफ अत्यावश्यक सेवा अनुरक्षण कानून (एस्मा) के तहत कार्रवाई होगी।

एस्मा लगाना समझ से परे : कमल नाथ : उधर, पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ ने स्वास्थ्य सेवाओं पर एस्मा लागू करने के फैसले को समझ से परे बताया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि जब चिकित्सक, मेडिकल स्टाफ, सरकारी अधिकारी-कर्मचारी सभी बेहद ईमानदारी से काम कर रहे हैं तो फिर एस्मा का फैसला समझ नहीं आता। राज्यसभा सदस्य विवेक तन्खा ने भी मप्र सरकार के इस फैसले पर आपत्ति जताई है।

तब्लीगियों की हरकतें देशद्रोही, सख्त धाराएं लगें : इंद्रेश कुमार

जासं, नई दिल्ली : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने कहा कि पकड़े जा रहे तब्लीगी जमात के लोगों की हरकतें देशद्रोही और समाजद्रोही हैं। इन पर सख्त से सख्त धाराएं लगनी चाहिए। राज्य सरकारों को भी इनसे सख्ती से निपटना चाहिए। इंद्रेश कुमार अखंड भारत मोर्चा की वेबसाइट को लांच करने के बाद फेसबुक लाइव के माध्यम से कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने देश के मुस्लिम नेताओं और धर्मगुरुओं पर कटाक्ष किया कि अब तक किसी भी बड़े मुस्लिम नेता ने तब्लीगी जमात को यह समझाने की कोशिश नहीं की है कि वे असामाजिकता न करें।

कोरोना संक्रमण फैलाने की अफवाह के बाद भिड़े दो समुदायों के लोग, एक की हत्या

जागरण संवाददाता, गुमला

▶ झारखंड के गुमला में मंगलवार रात हुई घटना, आधा दर्जन घायल

झारखंड में गुमला के सिसई में कोरोना संक्रमण फैलाने की अफवाह में मंगलवार रात दो समुदायों के बीच हिंसक झड़प हो गई। इसमें एक समुदाय के युवक की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई, जबकि दोनों समुदायों के आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। इनमें दो लोगों का रांची के रिम्स में इलाज चल रहा है। घटना को लेकर दूसरे दिन भी सिसई में तनाव रहा। एहतियात के तौर पर पूरे इलाके में पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी लगातार इलाके में कैंप कर रहे हैं। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए लोगों को घरों से निकलने पर पूर्ण पाबंदी लगा दी गई है। पुलिस दोनों पक्षों से 22 लोगों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ कर रही है। आइजी नवीन कुमार सिंह ने बताया कि अफवाह फैलाने वालों को चिन्हित कर लिया गया है। उन्हें बख्शा नहीं जाएगा।

दो-तीन दिनों से फैली थी अफवाह : बताया जाता है कि सिसई में दो-तीन दिनों से कोरोना का संक्रमण फैलाने को लेकर अफवाह फैली थी। इसी बीच मंगलवार शाम अनिस आलम नामक दिव्यांग युवक चेकनाका के समीप कुदरा गांव में चला गया था। लोगों ने मुहल्ले में आने का कारण पूछते हुए उसकी जमकर पिटाई कर दी। समुदाय विशेष के युवक की पिटाई की खबर फैली तो कुछ लोगों ने दोनों समुदाय के लोगों के अलग-अलग गोलबंद होने की खबर फैला दी। इसके बाद सिसई खास बस्ती के लोग हरवे-हथियार लेकर सिसई बस्ती की ओर निकल पड़े। फिर चोर-चोर का शोर मचाना शुरू कर दिया। आवाज सुन दूसरे समुदाय के लोग भी पहुंच गए। उनके पहुंचते ही सिसई खास बस्ती के लोगों ने घातक हथियारों से उनपर हमला बोल दिया। इस हमले में बोलवा उरांव की मौत हो गई।

मां के दूध ने दी ताकत, दो साल के मनजिंदर ने दी कोरोना को मात

सुशील पांडे, नवांशहर

कोरोना के विजेता

दो साल के मनजिंदर सिंह ने मां के दूध से मिली ताकत से कोरोना जैसी बीमारी को मात दी है। आइसोलेशन वार्ड में भी वह मां का दूध पीता रहा। डॉक्टरों के मुताबिक दवाइयों और मां के दूध ने बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी बढ़ा दी है कि अब कोरोना वायरस दोबारा उसे संक्रमित नहीं कर सकता है। हालांकि मां भी कोरोना संक्रमित है, लेकिन उससे बच्चे को कोई खतरा नहीं है। इस मासूम की मंगलवार को दूसरी रिपोर्ट नेगेटिव आई तो मां की आंखों से आंसू निकल आए। उसने बच्चे को सीने से लगाकर परमात्मा का शुक्रिया अदा किया। दो दिन पहले ही डॉक्टरों ने अस्पताल में बच्चे का दूसरा जन्मदिन मनाया था। बच्चे के दादा बुजुर्ग पाठी की 18 मार्च को कोरोना से मौत हुई थी।

मासूम मनजिंदर का इलाज करने वाले डॉक्टर गुरपाल कटारिया का कहना है कि बच्चा बहुत समझदार है। नर्सिंग स्टाफ जब उसे दवा पिलाता था तो वह बिना जिद किए पी लेता था। दवा पिलाने पर कभी नहीं रोया। बच्चे को आइसोलेशन वार्ड में भी घर जैसा माहौल मिला। इसी वार्ड में उसकी मां सहित परिवार के छह अन्य सदस्य रखे गए थे। वह एक तरह से परिवार के साथ ही रहता था। कई बार बाहर जाने की जिद करता था, लेकिन परिवार के लोग उसे समझा देते थे। डॉ. गुरपाल के अनुसार बच्चा आइसोलेशन वार्ड में अपनी मां के पास ही रहता है। मां के हाथ से ही खाना खाता है और अब भी मां का दूध पीता है। डॉक्टर के अनुसार यह वायरस मां के दूध के साथ ट्रांसमिट नहीं होता है। बच्चे को समय-समय पर दवाई दी गई। इसके साथ मां का दूध भी बहुत लाभकारी रहा है। वह अब भी मां के पास ही रहेगा। मनजिंदर की मां की रिपोर्ट पांच दिन बाद आएगी। अगर रिपोर्ट भी नेगेटिव आएगी तो फिर दोनों को एक साथ डिस्चार्ज किया जाएगा।

परिवार के तीन अन्य बच्चे भी हुए कोरोना से मुक्त : बुजुर्ग पाठी के परिवार के तीन अन्य बच्चे भी कोरोना से मुक्त हो गए हैं। आठ वर्षीय गुरलीन फतेह सिंह की बेटी है, जो सोमवार को ही ठीक हो गई थी। 18 वर्षीय हरप्रीत कौर व 12 वर्षीय किरणप्रीत कौर सगी बहनें हैं। डॉक्टर के अनुसार तीनों बच्चे डॉक्टर का हमेशा ही कहना मानते थे। बच्चे के चाचा फतेह सिंह ने भी कोरोना पर विजय पाई थी।

फिल्म निर्माता करीम मोरानी भी कोरोना पॉजिटिव

मुंबई, प्रेट्र : फिल्म निर्माता करीम मोरानी में भी कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई है। एक दिन पहले ही उनकी दोनों बेटियों शजा और जोया कोरोना संक्रमित पाई गई थीं। उनसे पहले बॉलीवुड गायिका कनिका कपूर और अभिनेता पूरब कोहली भी कोरोना संक्रमित पाए गए थे। शजा और जोया छह अप्रैल को कोरोना संक्रमित पाई गई थीं और दोनों का अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। फिल्म निर्माता के भाई मुहम्मद मोरानी ने बताया, 'करीम भाई कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। उनकी जांच रिपोर्ट बुधवार सुबह मिली है। हम उन्हें नानावटी अस्पताल में भर्ती करवा रहे हैं। उनकी पत्नी और घर के स्टाफ कोरोना निगेटिव पाए गए हैं। शजा और जोया की तबीयत अब बेहतर है। शजा के दो टेस्ट और होंगे।' करीम मोरानी शाह रुख खान की फिल्म रा.वन, चेन्नई एक्सप्रेस, हैप्पी न्यू ईयर और दिलवाले के सहनिर्माता रहे हैं।

कार्रवाई

शिवराज ने जिस अधिकारी को सराहा, उसी को हटा दिया

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भोपाल के सीएमएचओ डॉ डेहरिया का किया तबादला

राज्य ब्यूरो, भोपाल

कोरोना संकट के दौर में भोपाल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमएचओ) सुधीर डेहरिया को अचानक हटाकर सीहोर भेज दिया गया है। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आठ दिन पहले ही डेहरिया को कर्मठ और समर्पित अधिकारी बता सैल्यूट करते हुए कहा था, 'हमें आप पर गर्व है। लेकिन, बुधवार को यकायक उनको हटाए जाने के निर्णय कर लिया, जिस पर सवाल उठने लगे हैं।

बताया जाता है कि भोपाल में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ने को लेकर वरिष्ठ स्तर पर समीक्षा के बाद यह पाया गया कि स्वास्थ्य विभाग में अपेक्षित सतर्कता का ध्यान नहीं रखा जा रहा। स्वास्थ्य विभाग के कई कर्मचारी इस समय कोरोना की चपेट में हैं। विभाग ने इस दौरान जरूरी सुरक्षात्मक उपाय अपनाने में ढील बरती और समुचित स्क्रीनिंग भी नहीं की जा रही। एक दिन पूर्व ही अतिरिक्त मुख्य सचिव मोहम्मद सुलेमान को स्वास्थ्य विभाग की कमान सौंपी गई है। उनके साथ ही स्वास्थ्य संचालक बतौर सुदाम खाडे की पदस्थापना के आदेश जारी किए गए हैं। इस बीच जब नए सिरे से भोपाल की समीक्षा की गई तो डॉ. डेहरिया को हटाने का फैसला कर दिया गया। यह भी बताया गया कि डॉ. डेहरिया को लेकर कई स्तर पर शिकायतें की गई कि वे कोरोना नियंत्रण पर कम ध्यान दे रहे हैं, जबकि प्रचार-प्रसार पर उनका ज्यादा फोकस है।

घर की दहलीज से लौटने पर आए थे सुर्खियों : डॉ. डेहरिया उस वक्त सुर्खियों में आए थे, जब कोरोना संक्रमण के चलते वह लगातार पांच दिन की ड्यूटी के बाद थोड़ी देर के लिए अपने घर पहुंचे थे। 30 मार्च को घर के बाहर चबूतरे पर बैठकर उन्होंने अपने परिजनों से मुलाकात की और चाय पीकर वापस ड्यूटी पर लौट आए थे। डॉ. डेहरिया की यह फोटो जमकर वायरल हुई और उन्हें लोगों की तारीफ भी मिली। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी 31 मार्च को डॉ. डेहरिया के इस फोटो को अपने ट्विटर पर टैग कर उन्हें 'कोरोना वॉरियर' बताते हुए शत-शत नमन किया और गर्व भी जताया था।

▶ आठ दिन पहले ही सुधीर को कर्मठ और समर्पित अधिकारी बता सैल्यूट किया था

शिवराज सिंह चौहान फाइल

एक सप्ताह पहले भी हटाए गए थे

डॉ. डेहरिया को सीएमएचओ के पद पर ही सीहोर भेजा गया है। सीहोर के डॉ. प्रभाकर तिवारी को भोपाल का नया सीएमएचओ बनाया गया है। उल्लेखनीय है कि एक सप्ताह पहले भी डेहरिया को सीएमएचओ पद से हटाकर जेपी अस्पताल में बतौर विशेषज्ञ पदस्थ कर दिया गया था, लेकिन बाद में एक प्रशासनिक अधिकारी के कहने पर छह घंटे के भीतर ही उन्हें वापस सीएमएचओ बना दिया गया था।